भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(7), जुलाई 2026, पृ. 640-652
DOI: 10.56042/ijtk.v25i7.25873

खॉरिह्रिम गाँव (भारत-इंडो-बर्मा जैवविविधता हॉटस्पॉट) केऔषधीय पौधों का मात्रात्मक नृवंश-वनस्पति अध्ययन, जिसमें मिमोसासी, यूफोर्बिएसी तथा वर्बेनेसी प्रमुख कुल हैं

ह्मिंगरेम्हलुआ साइलो[क], जोथनमाविया[क], बेनडांगचुचांग लॉन्गचर[क,ख], वनलालहुआई राल्ते[क], एचलालरु आतसांगा[क,ख] एवं पी सी वनलालहलुना[क,*]
[क]वनस्पति विज्ञान विभाग, पाछुंगा यूनिवर्सिटी कॉलेज, आइज़ोल 796 004, मिज़ोरम, भारत
[ख]जीवन विज्ञान विभाग, पाछुंगा यूनिवर्सिटी कॉलेज, आइज़ोल 796 004, मिज़ोरम, भारत
[*]ई-मेल: pcvanlalhluna@yahoo.com

प्राप्त 08 जनवरी 2026; संशोधित 16 अप्रैल 2026; स्वीकृत 08 जुलाई 2026

मिज़ोरम, भारत के इंडो-बर्मा पादप विविधता के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। लेकिन आज भी कई सुदूरगाँवों का दस्तावेजीकरण नहीं हुआ हैं और सतत विकास के लिए उन स्थानों का वैज्ञानिक अन्वेषण आवश्यक है। ऐसा ही एक गाँव है ख्वारीह्रिम, जो लगभग 23°41'N, 92°36'E पर स्थित एक उच्च-ऊंचाई वाला क्षेत्र है। यह भौगोलिकरूप से थक, खड़ी ढलानों वाली पहाड़ी है जहाँ बाहरी प्रभाव बहुत कम है, जिससे यह नृजातीय-वनस्पति (एथ्नोबॉटनिकल) अनुसंधान के लिए एक नया स्थल बन जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन ख्वारीह्रिम गाँव के पारंपरिक औषधीय ज्ञान का सांस्कृतिक महत्व, अंतर-सांस्कृतिक प्रासंगिकता, संरक्षण और औषधीय अनुप्रयोगों की संभावना के संदर्भ में अध्ययन करता है। यह अध्ययन 2023 से 2024 के बीच साक्षात्कारों और अनुभवी स्थानीय सूचनादाताओं के साथ क्षेत्रीय कार्य के माध्यम से किया गया है।उपयोग रिपोर्ट (UR), सापेक्षउद्धरण आवृत्ति (RFC), सापेक्षमहत्व (RI), उपयोगमूल्य (UV), निष्ठास्तर (FL), सांस्कृतिकमूल्य (CVe) और सर्वसम्मति सूचकांक (CI) जैसे मात्रात्मक सूचकांकों की गणना की गई है। संरक्षण स्थिति की जाँच IUCN रेडलिस्ट के आधार पर की गई।

अध्ययन में कुल 41 फैमिली की 52 औषधीय प्रजातियाँ दर्ज की गईं। एल्बिज़िया चिनेंसिस (UR = 170, UV = 1.545), एल्स्टोनिया स्कोलारिस (RFC = 0.773, CI = 1.636) और एका इरेंथीस एस्पेरा (RFC = 0.545, UV = 1.091) उच्च औषधीय मूल्य वाली प्रजातियाँ पाई गईं। यह भी देखा गया कि सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला पादप भाग पत्ती था, जिसे अधिकांशतः काढ़े के रूप में तैयार किया जाता है। अंतर-सांस्कृतिक तुलना से पड़ोसी पूर्वोत्तर भारतीय जनजातियों के पारंपरिक औषधीयज्ञान के साथ उल्लेखनीय समानताएँ भी सामने आईं।

अंततः अधिकांश औषधीय पौधों को कम" चिंताजनकलीस्ट) " कंसर्नश्रेणी "अमूल्यांकित" या (में वर्गीकृत किया गया। हालाँकि, सिनेमोमम वेरम की स्थिति (वल्नरेबल) "सुभेद्य" पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार, यह शोध कार्य एक अल्पअध्ययनित- क्षेत्र के लिए नए नृजातीयऔषधीय- आँकड़े तथा संरक्षण एवं औषधीय मूल्यांकन को प्राथमिकता देने हेतु एक आधारभूत रूप रेखा प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: जैवविविधता संरक्षण, नृवंश-वनस्पति विज्ञान, स्वदेशी ज्ञान, औषधीय पौधे, मिज़ोरम, मात्रात्मक सूचकांक, पारंपरिक चिकित्सा